नवम्बर 2017

वर्ष 30 चतुर्थ अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

9 समसामयिक सामान्य ज्ञान

16 आर्थिक परिदृश्य

23 राष्ट्रीय परिदृश्य

26 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

31 क्रीड़ा जगत्

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 सारभूत तत्व कोष

41 युवा प्रतिभाएं

लेख

44 न्याय प्रणाली लेख—भारत में न्यायिक सक्रियता की अवधारणा एवं प्रासंगिकता

46 अंतरिक्ष लेख—इसरो के भावी मिशन

47 सैन्य लेख—उत्तर कोरिया : सनकी तानाशाह के हाथ में ब्रह्मास्त्र

48 कैरियर लेख—आईबीपीएस द्वारा आयोजित राष्ट्रीयकृत बैंकों में लिपिक बनने का सुनहरा अवसर

हल प्रश्न-पत्र

50 रेलवे भर्ती बोर्ड गैर-तकनीकी (एनटीपीसी) परीक्षा, 2016

59 मध्य प्रदेश सब-इंस्पेक्टर पुलिस भर्ती परीक्षा, 2016

69 हरियाणा चालक भर्ती परीक्षा, 2017

आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित लिपिकीय संवर्ग (मुख्य) परीक्षा, 2016

75 तर्कशक्ति

79 संख्यात्मक अभियोग्यता

85 सामान्य ज्ञान

87 कम्प्यूटर जानकारी

89 English Language

95 बिहार एस.एस.सी. (अमीन) परीक्षा, 2014

101 एस.एस.सी. मल्टी टास्किंग (गैर-तकनीकी) स्टाफ परीक्षा, 2016

111 आगामी उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा हेतु विशेष हल-प्रश्न (कक्षा I से V तक)

सामान्य/विविध

123 वार्षिक रिपोर्ट 2016-17—सूचना और प्रसारण क्षेत्र में अनुसंधान, विकास एवं प्रशिक्षण सम्बन्धी उपलब्धियाँ—एक दृष्टि में

125 सामान्य जानकारी—सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में सरकार की नई पहल/योजना

127 क्या आप परिचित हैं ?

129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

वाणी पर अंकुश लगाइए

"Know your Powers. The power of your words, your silence, your mind, your body language and your body itself control them."

वाणी मनुष्य जाति का वह वरदान है, जिसके माध्यम से वह अपने को, अपने विचारों एवं भावों को व्यक्त करने में समर्थ होता है. हम सामान्यतः यह मानते आए हैं कि वाणी एवं भाषा का वरदान केवल मानव को ही प्राप्त है, परन्तु वैज्ञानिक शोधों ने अब यह प्रमाणित कर दिया है कि अन्य जीवधारी भी पशु जगत एवं वनस्पति जगत भी वाणी के वरदान से वंचित नहीं हैं. वे भी परस्पर कहने-सुनने की प्रक्रिया अपनाते रहते हैं. यह दूसरी बात है कि हम उनकी वाणी न समझते हों. गोस्वामी तुलसीदास का यह कथन निरर्थक न होकर पक्षियों के इस वरदान की ओर इंगित करता है—खग समुझै खग ही की भाषा। अस्तु।

वाणी मनुष्य का अधिकार है— केवल बोलना ही नहीं, बल्कि स्वतन्त्रापूर्वक बोलना मानव का मौलिक अधिकार है. वाणी की स्वतंत्रता को समस्त देशों में संवैधानिक मान्यता प्राप्त है, परन्तु आजकल हम देखते हैं कि वाणी की स्वतंत्रता को उसने वाणी की उच्छृंखलता की सीमा तक पहुँचा दिया है. कुछ ऐसा प्रचलन हो गया है कि व्यक्ति जो भी चाहता है कहता रहता है और वह यह विचार करना आवश्यक नहीं समझता है कि वह क्या कर रहा है, मैं स्वतंत्रता की सीमाओं का उल्लंघन तो नहीं कर रहा हूँ, मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह तथ्यों से परे तो नहीं है, मैं अपने कथन के अनुसार कार्य कर सकूँगा अथवा नहीं आदि. हमारे राजनेता वाणी पर किसी प्रकार का नियंत्रण न रखने के सर्वाधिक दोषी हैं. आप आए दिन देख सकते हैं कि वे लोग विधान सभाओं में तथा लोक सभा में किस प्रकार अपनी बात कहते हैं. इस प्रकार के व्यवहार द्वारा हमारे कर्णधार, हमारे भावी कर्णधारों, युवावर्ग को क्या सिखा रहे हैं तथा इस प्रकार की वाणी का दुरुपयोग सम्भवतः पशु-पक्षी भी नहीं करते होंगे.

शास्त्र का कथन है कि—

''सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्''।
नासत्यं च प्रिय ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः॥

सत्य और प्रिय बोलना चाहिए, परन्तु अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए और प्रिय असत्य भी नहीं बोलना चाहिए यही सनातन धर्म है. तात्पर्य यह है कि प्रिय कथन वाणी की सार्थकता है. प्रमाण यह है कि प्रिय वाणी सब सुनना चाहते हैं. अप्रिय बोलते समय हम कितने भी तर्क दे सकते हैं, परन्तु अप्रिय वाणी सुनते समय हमारे पास एक भी तर्क नहीं होता है. प्रकृति भी चाहती है कि हम वाणी का प्रयोग प्रिय कथन हेतु करें—

●●●